॥ सूर्य ग्रह मंत्र, जप, कवच, स्तोत्र ॥

अनुक्रमाणिका

1. सूर्य मन्त्र 02
2. सूर्य प्रार्थना, व्रत, स्नान, दान 03
3. सूर्य वैदिक मन्त्र न्यासादि प्रयोग 04
4. सूर्य कवचम् 05
5. सूर्य कवचम् (रुद्रयामल) 06
6. आदित्य हृदय स्तोत्रम् 09
7. सूर्य स्तोत्रम् - १ 12
8. सूर्य स्तोत्रम् - २ 14
9. सूर्य स्तोत्रम् (याज्ञवल्क्य कृतं) 15
10. सूर्य मण्डल स्तोत्रम् / गायत्री स्तवन 16
11. सूर्य द्वादश नाम स्तोत्रम् 17
12. सूर्य एहेतुंशति (२१) नाम स्तोत्रम् 17
13. सूर्याष्टकम् 18
14. चाक्षुषोपनिषद् 19
15. सूर्य अष्टोत्तरशत नामावली 20
16. सूर्य चालीसा 21
17. सूर्य देव की आरती 23
18.

सूर्य यन्त्रम्

रसेन्दुनागा नगवाणरामा
युग्मांकवेदा नवकोष्ठमध्ये ।
विलिख्य धार्यं गदनाशनाय
वदन्ति गर्गामहामुनीन्द्राः ॥

६	१	८
७	५	३
२	९	४

पं. अजय शर्मा - 7234923855

जन्म पत्री विशेषज्ञ

॥ सूर्य देव ग्रह ॥

सूर्य कलिंग देश में उद्भव। कश्यप गोत्र। जाति क्षत्रिय। माता अदिति। जन्म नाम मार्तण्ड। प्रथम पत्नी संज्ञा जिससे वैवस्वत मनु, यम, यमी उत्पन्न हुए। दूसरी पत्नी छाया जिससे सावर्णिकी मनु, शनि, ताप्ती, अश्विनी

- **शुभाशुभत्व** — **क्रूर ग्रह**
- **भोग काल** — **30 दिन (एक मास)**
- **बीज मंत्र** — **ॐ घृणि: सूर्याय नम: ।**
  - **ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नम: ।**
  - ॐ सूर्याय नम: ।
- **तांत्रिक मंत्र** — **ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय नम: ।**
  - **ह्रिं ह्रयूं ।** द्वयक्षर मन्त्र मार्त्तण्ड भैरव
  - **ॐ ह्सौ: श्रीं आं ग्रहाधिराजाय आदित्याय स्वाहा ।** विश्वनाथसारोद्धारे
- **वैदिक मंत्र** — **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥**
- **पुराणोक्त मंत्र** — **ॐ जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥**
- **अधिदेवता-ईश्वरम्** — **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥**
- **प्रत्यधिदेवता-अग्निम्** — **ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपहब्रुवे । देवाँ ऽआसादयादिह ।**
- **सूर्य गायत्री मंत्र** — **ॐ आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नो सूर्य: प्रचोदयात् ॥**
- **जप संख्या** — **7,000 कलयुगे चतुर्थगुणो अर्थात 28,000
+ दशांश हवन 2,800
+ दशांश तर्पण 280
+ दशांश मार्जन 28 = 31,108**
- **जप समय** — **सूर्योदय काल**
- **हवनवस्तु** — **अर्क, मदार**
- **रत्न** — **मीणिक या विद्रुम - 6.5 रत्ती, रविवार, पूर्व दिशा, प्रात:काल, अनामिका**

- **सूर्य प्रार्थना**

  पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः, पद्मद्युतिः सप्ततुरङ्गवाहः ।
  दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी, मयि प्रसादं विदधातु देव ॥

  - हे सूर्यदेव! आप रक्तकमल के आसनपर विराजमान रहते हैं, आपके दो हाथ हैं तथा आप दोनों हाथों में रक्तकमल लिये रहते हैं। रक्तकमल के समान आपकी आभा है। आपके वाहन - रथ में सात घोड़े हैं, आप दिन में प्रकाश फैलाने वाले हैं, लोकों के गुरु हैं तथा मुकुट धारण किये हुए हैं, आप प्रसन्न होकर मुझपर अनुग्रह करें।

- **सूर्य का व्रत**

  एक वर्ष या ३० रविवारों तक अथवा १२ रविवारों तक करना चाहिये। व्रत के दिन लाल रंग का वस्त्र धारण करके '**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः** इस मन्त्र का १२ या ५ अथवा ३ माला जप करे जप के बाद शुद्ध जल, रक्त चन्दन, अक्षत, लाल पुष्प और दूर्वा से सूर्य को अर्घ्य दे। भोजन में गेहूँ की रोटी, दलिया, दूध, दही, घी और चीनी खाये। नमक नहीं खाये। इस व्रत के प्रभाव से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाता है। तेजस्विता बढ़ती है। शारीरिक रोग शान्त होते हैं। आरोग्यता प्राप्त होती है।

- **अनिष्टे सूर्ये शान्ति स्नानम्**

  - **काश्मीरयष्टीमधुपद्मकैला, मनःशिलोशीरवसन्तदूतिभिः ।**
    सदारुभिः स्यादहिते खरांशौ, निमज्जनं नुः किल कर्मसिद्ध्यै ॥
  - सूर्य की अनिष्ट-शान्ति के लिये केशर, जेठीमधु, कमलगट्टा, इलायची, मनःशिल, खस, देवदारु और पाटला से स्नान करना चाहिये।

- **सूर्य दान**

  कौसुम्भवस्त्रं गुडहेमताम्रं, माणिक्यगोधूमसुवर्णपद्म् ।
  सवत्सगोदानमिति प्रणीतं, दुष्टाय सूर्याय मसूरिकाश्च ॥ ज्योतिःसार

  - **माणिक्य गोधूम सवत्स धेनुः कोसुंभवासो गुडहेमताम्रम् ।**
    आरक्तकं चन्दनमंबुजं च वदंति दानं रविनन्दनाय ॥
  - सूर्य हेतु लाल-पीले रंग से मिश्रित वर्ण का वस्त्र, गुड़, स्वर्ण, ताम्र, माणिक्य, गेहूँ, लाल कमल, सवत्सा गौ तथा मसूर की दाल का दान करना चाहिये।
  - सूर्य प्रतिकूल स्थिति में हो तो ' धेनु' का दान करना चाहिये।
  - 'संहिता प्रदीप' ग्रन्थ के अनुसार सूर्य हेतु ' ताम्बूल' का दान करना चाहिये।
  - रविवार के दिन यथाशक्ति दक्षिणा के साथ देना चाहिए।

पं. अजय शर्मा - 7234923855
जन्म पत्री विशेषज्ञ

॥ सूर्य वैदिक मन्त्रन्यासादि प्रयोगः ॥

किसी की जन्म कुण्डली में सूर्य शनि या सुर्य राहु साथ हो या आमने सामने हो तो व्यक्ति जीवन में दुःखी रहता है। सूर्य से चौथे, आठवें, बाहरवें, शनि या राहु केतु होवे तो भी व्यक्ति को सामाजिक, आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। नेत्र पीड़ा, चर्मरोग कुछरोग अकस्मात् धोखा, घात योग भी व्यक्ति को प्राप्त होते हैं। अत: व्यक्ति को सूर्योपासना करती चाहियें।

- **वैदिक मंत्र** **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।**
  हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

- **विनियोगः** आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूप ऋषि:। अनुष्टप् छंदः। सविता देवता। रजसेति बीजम्। वर्त्तमान इति शक्तिः। सूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥

- **ऋष्यादि न्यासः** ॐ हिरण्यस्तूपत्ऋषये नमः, शिरसि। ॐ त्रिष्टुप् छन्दसे नमः, मुखे। ॐ सवितृदेवतायै नमः, हृदये। ॐ रजसा बीजाय नमः, गुह्ये। ॐ वर्त्तमानशक्तये नमः, पादयोः॥

- **करन्यासः-** ॐ आकृष्णेनेत्यंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ रजसेति तर्जनीभ्यां नम:। ॐ वर्त्तमान इति मध्यमाभ्यां नमः। ॐ निवेशयन्नमृतम्मर्त्यंचेत्यनामिकाभ्यां नमः। ॐ हिरण्ययेन सविता रथेनेति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ आदेवो भुवनानि पश्यन्निति करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः॥

- **हृदयादिन्यासः-** ॐ आकृष्णेनेति हृदयाय नमः। ॐ रजसेति शिरसे स्वाहा। ॐ वर्तमान इति शिखायै वषट्। ॐ निवेशयन्नमृतम्मत्यं चेति कवचाय हुं। ॐ हिरण्ययेन सविता रथेनेति नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ आदेवोयाति भुवनानि पश्यन्नित्यस्त्राय फट्॥

- **मन्त्रन्यासः-** ॐ आकृष्णेनेति शिरसि। ॐ रजसेति ललाटे। ॐ वर्त्तमान इति मुखे। ॐ निवेशयन्निति हृदये। ॐ अमृतं चैति नाभौ। ॐ मर्त्यंचेति कट्याम्। ॐ हिरण्ययेनेत्यूर्वोः। ॐ सवितेति जानुनो:। ॐ रथेनेति जंघयोः। ॐ आदे वो याति गुल्फयोः। ॐ भुवनानीति पादयोः। ॐ पश्यन्निति सर्वांगेषु न्यसेत्॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855

जन्म पत्री विशेषज्ञ

॥ सूर्य कवचम् ॥

- **विनियोग** अस्य श्री सुर्य कवच स्तोत्रस्य । ब्रह्मा ऋषि: । अनुष्टुप छंद: । सूर्यो देवता । सूर्य प्रीत्यर्थे जपे विनियोग: ॥

- **याज्ञवल्क्य उवाच**

  - **श्रणुष्व मुनिशार्दूल सूर्यस्य कवचं शुभम् ।**
    शरीरारोग्दं दिव्यं सव सौभाग्य दायकम् ॥ ॥१॥

  - **देदीप्यमान मुकुटं स्फुरन्मकर कुण्डलम ।**
    ध्यात्वा सहस्त्रं किरणं स्तोत्र मेततु दीरयेत् ॥ ॥२॥

  - **शिरों में भास्कर: पातु ललाट मेडमित दुति: ।**
    नेत्रे दिनमणि: पातु श्रवणे वासरेश्वर: ॥ ॥३॥

  - **ध्राणं धर्मं धृणि: पातु वदनं वेद वाहन: ।**
    जिव्हां में मानद: पातु कण्ठं में सुर वन्दित: ॥ ॥४॥

  - **रक्षात्मकं स्तोत्रं लिखित्वा भूर्ज पत्रके ।**
    दधाति य: करे तस्य वशगा: सर्व सिद्धय: ॥ ॥५॥

  - **सुस्नातो यो जपेत् सम्यग्योधिते स्वस्थ: मानस: ।**
    सरोग मुक्तो दीर्घायु सुखं पुष्टिं च विदंति ॥ ॥६॥

॥ इति श्री सूर्य कवच सम्पूर्णम् ॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855

जन्म पत्री विशेषज्ञ

॥ सूर्य कवचम् ॥

- **श्रीभैरव उवाच**

यो देवदेवो भगवान् भास्करो महसां निधिः।
गयत्रीनायको भास्वान् सवितेति प्रगीयते ॥ ॥ १ ॥

- तस्याहं कवचं दिव्यं वज्रपञ्जरकाभिधम्।
सर्वमन्त्रमयं गुह्यं मूल-विद्या-रहस्यकम् ॥ ॥ २ ॥
- सर्वपापापहं देवि दुःखदारिद्र्यनाशनम्।
महाकुष्ठहरं पुण्यं सर्वरोग निवर्हणम् ॥ ॥३ ॥
- सर्वशत्रुसमूहघ्नं सम्ग्रामे विजयप्रदम्।
सर्वतेजोमयं सर्व देव-दानव पूजितम् ॥ ॥ ४ ॥
- रणे राजभये घोरे सर्वोपद्रव नाशनम्।
मातृकावेष्टितं वर्म भैरवाननिर्गतम् ॥ ॥ ५ ॥
- ग्रहपीडा हरं देवि सर्वसङ्कटनाशनम्।
धारणादस्य देवेशि ब्रह्मा लोकपितामहः ॥ ॥ ६ ॥
- विल्णुर्नारायणो देवि रणे दैत्याञ्जिओष्यति।
शङ्करः सर्वलोकेशो वासवोऽपि दिवस्पतिः ॥ ॥ ७ ॥
- ओषधीशः शशी देवि शिवोऽहं भैरवेश्वरः।
मन्त्रात्मकं परं वर्म सवितुः सारमुत्तमम् ॥ ॥ ८ ॥
- यो धारयेद् भुजे मूर्ध्नि रविवारे महेश्वरि।
स राजवल्लभो लोके तेजस्वी वैरिमर्दनः ॥ ॥ ९ ॥
- बहुनोक्तेन किं देवि कवचस्यास्य धारणात्।
इह लक्ष्मीधनारोग्यस्वृद्धिर्भवति नान्यथा ॥ ॥१०॥
- परत्र परमा मुक्तिर्देवानाअमपि दुर्लभा।
कवचस्यास्य देवेशि मूलविद्यामयस्य च ॥ ॥११॥
- वज्रपञ्जरकाख्यस्य मुनिर्ब्रह्मा समीरितः
गायत्र्यं छन्द इत्युक्तं देवता सविता स्मृतः ॥ ॥१२॥
- माया बीजं शरत् शक्तिर्नमः कीलकमीश्वरि।
सर्वार्थसाधने देवि विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ॥१३॥

- **सूर्य कवचं**

ओं अं आं इं ईं शिरः पातु ओं सूर्यो मन्त्रविग्रहः।
उं ऊं ऋ ॠ ललाटं मे ह्रां रविः पातु चिन्मयः ॥ ॥१४॥

- लृं लॄ एं ऐं पातु नेत्रे ह्रीं ममारुणसारथिः।
ओं ओं अं अः श्रुती पातु सः सर्वजगदीश्वरः ॥ ॥१५॥
- कं खं गं घं पातु गण्डौ सूं सूरः सुरपूजितः।
चं छं जं झं च नासां मे पातु यार्म् अर्यमा प्रभुः ॥ ॥१६॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855
जन्म पत्री विशेषज्ञ

- टं ठं डं ढं मुखं पायाद् यं योगीश्वर पूजितः ।
  तं थं दं धं गलं पातु नं नारायण वल्लभः ॥ ॥१७॥
- पं फं बं भं मम स्कन्धौ पातु मं महसां निधिः ।
  यं रं लं वं भुजौ पातु मूलं सकनायकः ॥ ॥१८॥
- शं षं सं हं पातु वक्षो मूलमन्त्रमयोइ ध्रुवः ।
  ळं क्षः कुक्ष्सिं सदा पातु ग्रहाथो दिनेश्वरः ॥ ॥१९॥
- ङं ञं णं नं मं मे पातु पृष्ठं दिवस नायकः ।
  अं आं इं ई उं ऊं ऋं ॠं नाभिं पातु तमोपहः ॥ ॥२० ॥
- लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः लिङ्गं मेडव्याद् ग्रहेश्वरः ।
  कं खं गं घं चं छं जं झं कटिं भानुर्ममावतु ॥ ॥२१॥
- टं ठं डं ढं तं थं दं धं जानू भास्वान् ममावतु ।
  पं फं बं भं यं रं लं वं जंघे मेंऽ अव्याद् विभाकरः ॥ ॥२२॥
- शं षं सं हं ळं क्षः पातु मूलं पादौ त्रयितनुः ।
  ङं ञं णं नं मं मे पातु सविता सकलं वपुः ॥ ॥२३॥
- सोमः पूर्वे च मां पातु भौमोऽग्नौ मां सदावतु ।
  बुधो मां दक्षिणे पातु नैऋत्या गुरेव माम् ॥ ॥२४ ॥
- पश्चिमे मां सितः पातु वायव्यां मां शनैश्चरः।
  उत्तरे मां तमः पायादैशान्यां मां शिखी तथा ॥ ॥२५॥
- ऊर्ध्वं मां पातु मिहिरो मामधस्ताञ्जगत्पतिः ।
  प्रभाते भास्करः पातु मध्याह्ने मां दिनेश्वरः ॥ ॥२६॥
- सायं वेदप्रियः पातु निशीथे विस्फुरापतिः ।
  सर्वत्र सर्वदा सूर्यः पातु मां चक्रनायकः ॥ ॥२७॥
- रणे राजकुले द्यूते विदादे शत्रुसङ्घटे ।
  सङ्गामे च ज्वरे रोगे पातु मां सविता प्रभुः ॥ ॥२८॥
- ॐ ॐ ॐ उत ॐ उ ॐ ह स म यः सूरोऽ वतान्मां भयाद् ।
  ह्रां ह्रीं ह्रुं हहहा हसौः हसहसौः हंसोऽ वतात् सर्वतः ।
  सः सः सःससा नृपाद्वनचराच्चौराद्रणात् संकटात् ।
  पायान्मां कुलनायकोऽपि सविता ओं ह्रीं ह सौः सर्वदा ॥ ॥२९॥
- द्रां द्रीं द्रूं दधनं तथा च तरणिर्भाभैर्भयाद् भास्करो
  रां रीं रूं रुरुरूं रविर्ज्वरभयात् कुष्ठाच्च शूलामयात् ।
  अं अं आं विविवीं महामयभयं मां पातु मार्तण्डको
  मूलव्याप्ततनुः सदावतु परं हंसः सहस्रांशुमान् ॥ ॥३०॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855
जन्म पत्री विशेषज्ञ

- **फलश्रुतिः**

इति श्रीकवच्चं दिव्यं वज्रपञ्जरकाभिधम् ।
सर्वदेवरहस्यं च मातृकामन्त्रवेष्टितम् ॥ ॥३१॥

- महारोगभयघ्नं च पापघ्नं मन्मुखोदितम् ।
गुह्यं यशस्करं पुण्यं सर्वश्रेयस्करं शिवे ॥ ॥३२॥
- लिखित्वा रविवारे तु तिष्ये वा जन्मभे प्रिये ।
अल्टगन्धेन दिव्येन सुधाक्षीरेण पार्वति ॥ ॥३३॥
- अर्कक्षीरेण पुण्येन भूर्जत्वचि महेश्वरि ।
कनकीकाष्ठलेखन्या कवचं भास्करोदये॥ ॥३४॥
- श्वेत सूत्रेण रक्तेन श्यामेनावेष्टयेद् गुटीम् ।
सौवर्णेनाथ संवेष्ठ्य धारयेन्मूर्ध्नि वा भुजे ॥ ॥३५॥
- रणे रिपूञ्जयेद् देवि वादे सदसि जेष्यति ।
राजमान्यो भवेन्नित्यं सर्वतेजोमयो भवेत् ॥ ॥३६॥
- कण्ठस्था पुत्रदा देवि कुक्षिस्था रोगनाशिनी ।
शिरःस्था गुटिका दिव्या राकलोकव शङ्करी ॥ ॥३७॥
- भुजस्था धनदा नित्यं तेजोबुद्धिविवर्धिनी ।
वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याङ्गना ॥ ॥३८॥
- कण्ठे सा धारयेन्नित्यं बहुपुत्रा प्रजायये ।
यस्य देहे भवेन्नित्यं गुटिकैषा महेश्वरि ॥ ॥३९॥
- महास्त्राणीन्द्रमुक्तानि ब्रह्मास्त्रादीनि पार्वति ।
तद्देहं प्राप्य व्यर्थानि भविष्यन्ति न संशयः ॥ ॥४०॥
- त्रिकालं यः पठेन्नित्यं कवचं वज्रपञ्जरम् ।
तस्य सद्यो महादेवि सविता वरदो भवेत् ॥ ॥४१॥
- अज्ञात्वा कवचं देवि पूजयेद् यस्त्रयीतनुम् ।
तस्य पूजार्जितं पुण्यं जन्मकोटिषु निष्फलम् ॥ ॥४२॥
- शतावर्त पठेद्वर्म सप्तम्यां रविवासरे ।
महाकुष्ठार्दितो देवि मुच्यते नात्र संशयः ॥ ॥४३॥
- निरोगो यः पठेद्वर्म दरिद्रो वज्रपञ्जरम् ।
लक्ष्मीवाञ्जायते देवि सद्यः सूर्यप्रसादतः ॥ ॥४४॥
- भक्त्या यः प्रपठेद् देवि कवचं प्रत्यहं प्रिये ।
इह लोके श्रियं भुक्त्वा देहान्ते मुक्तिमाप्नुयात् ॥ ॥४५॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्री देवि-रहस्ये वज्र-पञ्जराख्य सूर्य कवच निरूपणम् त्रयस्त्रिंशः पटलः ॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855

जन्म पत्री विशेषज्ञ

॥ आदित्य हृदय स्तोत्रम् ॥

- **विनियोग** ॐ अस्य आदित्य-हृदय-स्तोत्रस्य । अगस्त्य ऋषि । अनुष्टप् छन्द । आदित्य-हृदय-भूतो । भगवान् ब्रह्मा देवता । निरस्ताशेषविघ्नतया । ब्रह्मविद्यासिद्धौ सर्वत्र जयसिद्धौ च विनियोग: ।
- **ऋष्यादिन्यास** ॐ अगस्त्यऋषये नमः, शिरसि । अनुष्टप् छन्दसे नमः, मुखे । आदित्य-हृदय-भूत-ब्रह्म देवतायै नमः, हृदि । ॐ बीजाय नमः, गुह्ये । रश्मिमते शक्तये नमः, पादयोः। ॐ तत्सवितुरित्यादि गायत्री कीलकाय नमः, नाभौ ।
- **करन्यास** ॐ रश्मिमते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ समुद्यते तर्जनीभ्यां नमः । ॐ देवासुर-नमस्कृताय मध्यमाभ्यां नमः । ॐ विवस्वते अनामिकाभ्यां नमः । ॐ भास्कराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ भुवनेश्वराय कर-तल-कर पृष्ठाभ्यां नमः ।
- **हृदयादि न्यास** ॐ रश्मिमते हृदयाय नमः। ॐ समुद्यते शिरसे स्वाहा । ॐ देवासुर नमस्कृताय शिखायै वषट् । ॐ विवस्वते कवचाय हुम् । ॐ भास्कराय नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ भवनेश्वराय अस्त्राय फट् ।

- **ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम् ।**
  रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ॥ ॥ १ ॥
- **दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम् ।**
  उपगम्याब्रवीद्राममगस्त्यो भगवांस्तदा ॥ ॥ २ ॥
- **राम राम महाबाहो श्रृणु गुह्यं सनातनम् ।**
  येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे ॥ ॥ ३ ॥
- **आदित्य हृदयं पुण्यं सर्व शत्रु विनाशनम् ।**
  जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम् ॥ ॥ ४ ॥
- **सर्वमङ्गल माङ्गल्यं सर्व-पाप-प्रणाशनम् ।**
  चिन्ता-शोक-प्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥ ॥ ५ ॥
- **रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुर नमस्कृतम् ।**
  पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥ ॥ ६ ॥
- **सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मि-भावनः ।**
  एष देवासुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः ॥ ॥ ७ ॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855
जन्म पत्री विशेषज्ञ

- एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः ।
  महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपाम्पतिः ॥ ॥ ८ ॥
- पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः ।
  वायुर्वह्निः प्रजाः प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः ॥ ॥ ९ ॥
- आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गर्भस्तिमान् ।
  सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः ॥ ॥१०॥
- हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान् ।
  तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान् ॥ ॥११॥
- हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः ।
  अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः ॥ ॥१२॥
- व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुः सामपारगः ।
  घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः ॥ ॥१३॥
- आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः ।
  कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ॥ ॥१४॥
- नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः ।
  तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु तो ॥ ॥१५॥
- नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः ।
  ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ॥ ॥१६॥
- जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः ।
  नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ॥ ॥१७॥
- नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः ।
  नमः पद्म-प्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते ॥ ॥१८॥
- ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे ।
  भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ॥ ॥१९॥
- तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने ।
  कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥ ॥२०॥
- तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे ।
  नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥ ॥२१॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855
जन्म पत्री विशेषज्ञ

- नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः ।
  पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥ ॥२२॥
- एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः ।
  एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥ ॥२३॥
- देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च ।
  यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः ॥ ॥२४॥
- एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च ।
  कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ॥ ॥२५॥
- पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम् ।
  एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि ॥ ॥२६॥
- अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि ।
  एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ॥ ॥२७॥
- एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत् तदा ।
  धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् ॥ ॥२८॥
- आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान् ।
  त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ॥ ॥२९॥
- रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमतत् ।
  सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत् ॥ ॥३०॥
- अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः ।
  निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ॥३१॥

॥ श्रीवाल्मीकीय रामायणे युद्धकाण्डे, अगस्त्यप्रोक्तमादित्यहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855

जन्म पत्री विशेषज्ञ

॥ सूर्य स्तोत्रम् - १ ॥

- नवग्रहाणां सर्वेषां सूर्यादीनां पृथक् पृथक्।
  पीड़ा च दुःसहा राजंजायते सततं नृणाम् ॥ ॥ १ ॥
- पीडानाशाय राजेन्द्र नामानि श्रृणु भास्वतः।
  सूर्यादीनां च सर्वेषां पीड़ा नश्यति श्रृण्वतः ॥ ॥ २ ॥
- आदित्यः सविता सूर्यः पूषाऽर्कः शीघ्रगो रविः।
  भगस्त्वष्टाऽर्यमा हंसो हंलिस्तेजोनिधिर्हरिः ॥ ॥ ३ ॥
- दिननाथो दिनकरः सत्पसप्तिः प्रभाकरः।
  विभावसुर्वेदकर्ता वेदांगो वेदवाहनः ॥ ॥ ४ ॥
- हरिदश्वः कालवक्त्रः कर्मसाक्षी जगत्पतिः।
  पद्मिनीबोधको भानुर्भास्करः करूणाकरः ॥ ॥ ५ ॥
- द्वादशात्मा विश्वकर्मा लोहितांगस्तमोनुदः।
  जगन्नाथोऽरविन्दाक्षः कालात्मा कश्यपात्मजः ॥ ॥ ६ ॥
- भूताक्षयो ग्रहपतिः सर्वलोकनमस्कृतः।
  जपाकुसुमसंकाशो भास्वानदितिनन्दनः ॥ ॥ ७ ॥
- ध्वान्तेभसिंह सर्वात्मा लोकनेत्रो विकर्तनः।
  मार्तण्डो मिहिरः सूरस्तपनो लोकतापनः ॥ ॥ ८ ॥
- जगत्कर्ता जगत्साक्षी शनैश्चरपिता जयः।
  सहस्त्ररश्मिस्तरणिर्भगवान्भक्तवत्सलः ॥ ॥ ९ ॥
- विवस्वानादिदेवश्च देवदेवा दिवाकरः।
  धन्वन्तरिव्याधिहर्ता दद्रुकुष्ठविनाशकः ॥ ॥१०॥
- चराचरात्मा मैत्रेयोऽमितो विष्णुर्विकर्तनः।
  लोकशोकापहर्ता च कमलाकर आत्मभूः ॥ ॥११॥
- नारायणो महादेवो रूद्रः पुरूष ईश्वरः।
  जीवात्मा परमात्मा च सूक्ष्मात्मा सर्वतोमुखः ॥ ॥१२॥
- इन्द्रोऽनलो यमश्चैव नैर्ऋतो वरूणोऽनिलः।
  श्रीद ईशान इन्दुश्च भौमः सोम्यो गुरूः कविः ॥ ॥१३॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855

जन्म पत्री विशेषज्ञ

- शौरिर्विधुन्तुदः केतुः कालः कालात्मको विभुः।
  सर्वदेवमयो देवः कृष्णः कामप्रदायकः ॥ ॥१४॥
- य एतैर्नामभिर्मत्र्यो भक्त्या स्तौति दिवाकरम्।
  सर्वापापविनिर्मुक्तः सर्वरोगविवर्जितः ॥ ॥१५॥
- पुत्रवान् धनवान् श्रीमांजायते स न संशयः।
  रविवारे पठेद्यस्तु नामान्येतानि भास्वतः ॥ ॥१६॥
- पीड़ाशान्तिर्भवेत्तस्य ग्रहाणां च विशेषतः।
  सद्यः सुखमवाप्नोति चायुर्दीर्घं च नीयजम् ॥ ॥१७॥

॥ इति श्री भविष्य पुराणे आदित्य स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855

जन्म पत्री विशेषज्ञ

॥ श्री सूर्य स्तोत्रम् - २ ॥

- **विनियोग** — अस्य श्रीभगवत्सूर्यस्तोत्रमहामन्त्रस्य अगस्त्य ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । श्रीसूर्यनारायणो देवता । सूं बीजम् । रिं शक्तिः । यं कीलकम् । सूर्यप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।
- **करन्यास** — आदित्याय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । अर्काय तर्जनीभ्यां नमः । दिवाकराय मध्यमाभ्यां नमः । प्रभाकराय अनामिकाभ्यां नमः । सहस्रकिरणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । मार्ताण्डाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।
- **हृदयादि न्यास** — आदित्याय हृदयाय नमः । अर्काय शिरसे स्वाहा । दिवाकराय शिखायै वषट् । प्रभाकराय कवचाय हुम् । सहस्रकिरणाय नेत्रत्रयाय वौषट् । मार्ताण्डाय अस्त्राय फट् । भूर्भुवः सुवरोमिति दिग्बन्धः ॥
- **ध्यानम्** — **ध्यायेत् सूर्यमनन्त कोटि-किरणं तेजोमयं भास्करं ।**
  भक्तानामभयप्रदं दिनकरं ज्योतिर्मयं शङ्करम् ॥

- **आदित्यं जगदीशमच्युतमजं त्रैलोक्यचूडामणिं ।**
  भक्ताभीष्टवरप्रदं दिनमणिं मार्ताण्डमाद्यं शुभम् ॥ ॥ १ ॥
- **कालात्मा सर्वभूतात्मा वेदात्मा विश्वतोमुखः ।**
  जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधि-संसार-भय-नाशनः ॥ ॥ २ ॥
- **ब्रह्मस्वरूप उदये मध्याह्ने तु महेश्वरः ।**
  अस्तकाले स्वयं विष्णुः त्रयीमूर्तिर्दिवाकरः ॥ ॥ ३ ॥
- **एकचक्र रथो यस्य दिव्यः कनक-भूषितः ।**
  सोऽयं भवतु नः प्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः ॥ ॥ ४ ॥
- **पद्महस्तः परञ्ज्योतिः परेशाय नमो नमः ।**
  अण्डयोने महासाक्षिन् आदित्याय नमो नमः ॥ ॥ ५ ॥
- **कमलासन देवेश भानु मूर्ते नमो नमः ।**
  धर्ममूर्ते दयामूर्ते तत्त्वमूर्ते नमो नमः ॥ ॥ ६ ॥
- **सकलेशाय सूर्याय छायेशाय नमो नमः ।**
  क्षयापस्मारगुल्मादिदुर्धोषव्याधि नाशनम् ॥ ॥ ७ ॥
- **सर्वज्वरहरं चैव सर्वरोग निवारणम् ।**
  एतत् स्तोत्रम् शिव प्रोक्तं सर्वसिद्धि करं परम् ॥ ॥ ८ ॥
- **सर्वसम्पत्करं चैव सर्वाभीष्ट प्रदायकम् ॥** ॥ ९ ॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855

जन्म पत्री विशेषज्ञ

॥ सूर्य स्तोत्रम (श्री याज्ञवल्क्य कृतम्) ॥

- ॐ नमो भगवते आदित्यायाखिल जगतां आत्मस्वरूपेण कालस्वरूपेण
  चतुर्विधभूत-निकायानां ब्रह्मादिस्तम्भ-पर्यन्तानां
  अन्तर्हृदयेषु बहिरपि चाकाश इव उपाधिनाऽव्यवधीयमानो
  भवानेक एव क्षणलव-निमेषावयवोपचित-संवत्सरगणेन
  अपा-मादान-विसर्गाभ्यां इमां लोकयात्रां अनुवहति ॥ ॥ १ ॥

- यदुह वाव विबुधर्षभ सवितरदस्तपत्यनुसवनं अहरहः
  आम्नायविधिना उपतिष्ठमानानां अखिल-दुरित-वृजिनबीजावभर्जन
  भगवतः समभिधीमहि तपनमण्डलम् ॥ ॥ २ ॥

- य इह वाव स्थिरचरनिकराणां निजनिकेतनानां मन-इन्द्रियासुगणान्
  अनात्मनः स्वयमात्मा अन्तर्यामी प्रचोदयति ॥ ॥ ३ ॥

- य एवेमं लोकं अतिकराल-वदनान्धकार-संज्ञा-जगरग्रह-गिलितं
  मृतकमिव विचेतनं अवलोक्य अनुकम्पया परमकारुणिकः ईक्षयैव
  उत्थाप्य अहरहरनुसवनं श्रेयसि स्वधर्माख्यात्मावस्थाने
  प्रवर्तयति अवनिपतिरिव असाधूनां भयमुदीरयन्नटति ॥ ॥ ४ ॥

- परित आशापालैः तत्र तत्र कमलकोशाञ्जलिभिः उपहृतार्हणः ॥ ॥ ५ ॥

- अथह भगवन् तव चरणनलिनयुगलं त्रिभुवनगुरुभिर्वन्दितं
  अहं अयातयामयजुः कामः उपसरामीति ॥ ॥ ६ ॥

- एवं स्तुतः स भगवान् वाजिरूपधरो हरिः ।
  यजूंष्ययातयामानि मुनयेऽदात् प्रसादितः ॥ ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीमद्भागवते द्वादशस्कन्धे श्री याज्ञवल्क्य कृतं श्री सूर्यस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855

जन्म पत्री विशेषज्ञ

॥ सूर्य मण्डल स्तोत्रम् अथवा गायत्री स्तवन ॥

यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालम्
रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम् ।
दारिद्र्य-दुःखक्षयकारणं च
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ॥१॥

यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितम्
विप्रैः स्तुतं मानवमुक्तिकोविदम् ।
तं देवदेवं प्रणमामि भर्गं
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ॥२॥

यन्मण्डलं ज्ञानघनं त्वगम्यं
त्रैलोक्यपूज्यं त्रिगुणात्मरूपम् ।
समस्त-तेजोमय-दिव्यरूपं
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ॥३॥

यन्मण्डलं गूढमतिप्रबोधं
धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम् ।
यत् सर्वपापक्षयकारणं च
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ॥४॥

यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षं
यदृग्-यजुः सामसु सम्प्रगीतम् ।
प्रकाशितं येन च भूर्भुवः स्वः
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ॥५॥

यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति
गायन्ति यच्चारण- सिद्धसङ्घाः ।
यद्योगिनो योगजुषां च सङ्घाः
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ॥६॥

यन्मण्डलं सर्वजनेषु पूजितं
ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके ।
यत्काल-कालादिमनादिरूपम्
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ॥७॥

यन्मण्डलं विष्णुचर्तुमुखास्यं
यदक्षरं पापहरं जनानाम् ।
यत्कालकल्पक्षयकारणं च
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ॥८॥

यन्मण्डलं विश्वसृजां प्रसिद्धं
उत्पत्ति-रक्षा प्रलयप्रगल्भम् ।
यस्मिन् जगत्संहरतेऽखिलं च
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ॥९॥

यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोः
आत्मा परंधाम विशुद्धतत्त्वम् ।
सूक्ष्मान्तरैर्योगपथानुगम्यं
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ॥१०॥

यन्मण्डलं ब्रह्मविदो वदन्ति
गायन्ति यच्चारण-सिद्धसंघाः ।
यन्मण्डलं वेदविदः स्मरन्ति
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ॥११॥

यन्मण्डलं वेद- विदोपगीतं
यद्योगिनां योगपथानुगम्यम् ।
तत्सर्ववेदं प्रणमामि दिव्यं
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ॥१२॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855
जन्म पत्री विशेषज्ञ

॥ दुःस्वप्न नाशन सूर्य स्तुतिः / द्वादश नाम स्तोत्रम् ॥

इस मन्त्र में सूर्य के १२ नामों का वर्णन है। प्रातःकाल पाठ करने से दुष्ट (बुरे) स्वप्न, दरिद्रता एवं सर्व दुखों का नास होता है। सुख, शांति आरोग्य मोक्ष की प्राप्ति होती है।

- आदित्यः प्रथमं नाम द्वितीयं तु दिवाकरः।
  तृतीयं भास्करः प्रोक्तं चतुर्थं तु प्रभाकरः॥ ॥ १ ॥
- पञ्चमं च सहस्रांशुः षष्ठं त्रैलोक्य लोचनः।
  सप्तमं हरिदश्वश्च अष्टमं च विभावसुः॥ ॥ २ ॥
- नवमं दिनकरः प्रोक्तो दशमं द्वादशात्मकः।
  एकादशं त्रयोमूर्तिः द्वादशं सूर्य एव च॥ ॥ ३ ॥
- द्वादशैतानि नामानि प्रातःकाले पठेन्नरः।
  दुःस्वप्ननाशनं सद्यः सर्वसिद्धिः प्रजायते॥ ॥ ४ ॥

॥ सूर्य के पवित्र, शुभ एवं गोपनीय २१ नाम ॥

- विकर्तनो विवस्वांश्च मार्तण्डो भास्करो रविः।
  लोक प्रकाशकः श्री माँल्लोक चक्षुर्मुहेश्वरः॥ ॥ १ ॥
- लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्ता हर्ता तमिस्रहा।
  तपनस्तापनश्चैव शुचिः सप्ताश्ववाहनः॥ ॥ २ ॥
- गभस्तिहस्तो ब्रह्मा च सर्वदेवनमस्कृतः।
  एकविंशतिरित्येष स्तव इष्टः सदा रवेः॥ ॥ ३ ॥

१. विकर्तन	८. लोकचक्षु	१५. तपन
२. विवस्वान	९. महेश्वर	१६. तापन
३. मार्तण्ड	१०. लोकसाक्षी	१७. शुचि
४. भास्कर	११. त्रिलोकेश	१८. सप्ताश्ववाहन
५. रवि	१२. कर्ता	१९. गभस्तिहस्त
६. लोकप्रकाशक	१३. हर्त्ता	२०. ब्रह्मा
७. श्रीमान	१४. तमिस्राहा	२१. सर्वदेवनमस्कृत

पं. अजय शर्मा - 7234923855

जन्म पत्री विशेषज्ञ

॥ सूर्याष्टकम् ॥

- **साम्ब उवाच**

आदिदेवं नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर ।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तुते ॥ ॥ १ ॥

- सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम् ।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥ ॥ २ ॥

- लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥ ॥ ३ ॥

- त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्माविष्णुमहेश्वरम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्य प्रणमाम्यहम् ॥ ॥ ४ ॥

- बृंहितं तेज:पुंजं च वायुमाकाशमेव च ।
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्य प्रणमाम्यहम् ॥ ॥ ५ ॥

- बन्धूकपुष्पसंकाशं हारकुंडलभूषितम् ।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्य प्रणमाम्यहम् ॥ ॥ ६ ॥

- तं सूर्यं जगत्कर्तारं महातेज प्रदीपनम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥ ॥ ७ ॥

- तं सूर्यं जगतां नाथं ज्ञानविज्ञानमोक्षदम् ।
महापापहर देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥ ॥ ८ ॥

- सूर्याष्टकं पठेन्नित्यं ग्रहपीडाप्रणाशनम् ।
अपुत्रो लभते पुत्र दरिद्रो धनवान्भवेत् ॥ ॥ ९ ॥

- आमिशं मधुपानं च यः करोति रवेर्दिने ।
सप्तजन्म भवेद्रोगी प्रतिजन्म दरिद्रता ॥ ॥१०॥

- स्त्रीतैलमधुमांसानि यस्त्यजेत्तु रवेर्दिने ।
न व्याधिः शोकदारिद्रयं सूर्यलोकं स गच्छति ॥ ॥११॥

॥ इति श्री शिवप्रोक्तं सूर्याष्टक स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855
जन्म पत्री विशेषज्ञ

॥ चाक्षुषोपनिषद् (चाक्षुषी विद्या) ॥

इस चाक्षुषी विद्या को श्रद्धा विश्वास पुर्वक पाठ करने से नेत्र के समस्त रोग दूर हो जाते हैं। आँख की ज्योति स्थिर रहती है। इसका पाठ नित्य करने वाले के कुल में कोई अन्धा नहीं होता। पाठ के अन्त में गन्धादि युक्त जल से सुर्य को अर्घ्य देकर नमस्कार करना चाहिये।

- **विनियोग** ॐ अस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिर्गायत्री छन्दः। सूर्यो देवता चक्षूरोग निवृत्तये विनियोगः।

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथा अहम् अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु करु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधक दुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय।

ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः।

य इमां चाक्षुष्पती विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा विद्या-सिद्धिर्भवति। ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा।

॥ श्रीकृष्णयजुर्वेदीया चाक्षुषी विद्या सम्पूर्णा ॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855

जन्म पत्री विशेषज्ञ

॥ श्री सूर्य अष्टोत्तरशत नामावली ॥

1. ॐ अरुणाय नमः।
2. ॐ शरण्याय नमः।
3. ॐ करुणारससिन्धवे नमः।
4. ॐ असमानबलाय नमः।
5. ॐ आर्तरक्षकाय नमः।
6. ॐ आदित्याय नमः।
7. ॐ आदिभूताय नमः।
8. ॐ अखिलागमवेदिने नमः।
9. ॐ अच्युताय नमः।
10. ॐ अखिलज्ञाय नमः।
11. ॐ अनन्ताय नमः।
12. ॐ इनाय नमः।
13. ॐ विश्वरूपाय नमः।
14. ॐ इज्याय नमः।
15. ॐ इन्द्राय नमः।
16. ॐ भानवे नमः।
17. ॐ इन्दिरामन्दिराप्ताय नमः।
18. ॐ वन्दनीयाय नमः।
19. ॐ ईशाय नमः।
20. ॐ सुप्रसन्नाय नमः।
21. ॐ सुशीलाय नमः।
22. ॐ सुवर्चसे नमः।
23. ॐ वसुप्रदाय नमः।
24. ॐ वसवे नमः।
25. ॐ वासुदेवाय नमः।
26. ॐ उज्ज्वल नमः।
27. ॐ उग्ररूपाय नमः।
28. ॐ ऊर्ध्वगाय नमः।
29. ॐ विवस्वते नमः।
30. ॐ उद्यत्किरणजालाय नमः।
31. ॐ हृषीकेशाय नमः।
32. ॐ ऊर्जस्वलाय नमः।
33. ॐ वीराय नमः।
34. ॐ निर्जराय नमः।
35. ॐ जयाय नमः।
36. ॐ ऊरुद्वयाभावरूप युक्तसारथये नमः।
37. ॐ ऋषिवन्द्याय नमः।
38. ॐ रुग्घन्त्रे नमः।
39. ॐ ऋक्षचक्रचराय नमः।
40. ॐ ऋजुस्वभावचित्ताय नमः।
41. ॐ नित्यस्तुत्याय नमः।
42. ॐ ऋकारमातृकावर्णरूपाय नमः।
43. ॐ उज्ज्वलतेजसे नमः।
44. ॐ ऋक्षाधिनाथमित्राय नमः।
45. ॐ पुष्कराक्षाय नमः।
46. ॐ लुप्तदन्ताय नमः।
47. ॐ शान्ताय नमः।
48. ॐ कान्तिदाय नमः।
49. ॐ घनाय नमः।
50. ॐ कनत्कनकभूषाय नमः।
51. ॐ खद्योताय नमः।
52. ॐ लूनिताखिलदैत्याय नमः।
53. ॐ सत्यानन्दस्वरूपिणे नमः।
54. ॐ अपवर्गप्रदाय नमः।
55. ॐ आर्तशरण्याय नमः।
56. ॐ एकाकिने नमः।
57. ॐ भगवते नमः।
58. ॐ सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे नमः।
59. ॐ गुणात्मने नमः।
60. ॐ घृणिभृते नमः।
61. ॐ बृहते नमः।
62. ॐ ब्रह्मणे नमः।
63. ॐ ऐश्वर्यदाय नमः।
64. ॐ शर्वाय नमः।
65. ॐ हरिदश्वाय नमः।
66. ॐ शौरये नमः।
67. ॐ दशदिक्संप्रकाशाय नमः।
68. ॐ भक्तवश्याय नमः।
69. ॐ ओजस्कराय नमः।
70. ॐ जयिने नमः।
71. ॐ जगदानन्दहेतवे नमः।
72. ॐ जन्ममृत्युजराव्याधि वर्जिताय नमः।
73. ॐ उच्चस्थान समारूढरथस्थाय नमः।
74. ॐ असुरारये नमः।
75. ॐ कमनीयकराय नमः।
76. ॐ अब्जवल्लभाय नमः।
77. ॐ अन्तर्बहिः प्रकाशाय नमः।
78. ॐ अचिन्त्याय नमः।
79. ॐ आत्मरूपिणे नमः।
80. ॐ अच्युताय नमः।
81. ॐ अमरेशाय नमः।
82. ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः।
83. ॐ अहस्कराय नमः।
84. ॐ रवये नमः।
85. ॐ हरये नमः।
86. ॐ परमात्मने नमः।
87. ॐ तरुणाय नमः।
88. ॐ वरेण्याय नमः।
89. ॐ ग्रहाणांपतये नमः।
90. ॐ भास्कराय नमः।
91. ॐ आदिमध्यान्तरहिताय नमः।
92. ॐ सौख्यप्रदाय नमः।
93. ॐ सकलजगतांपतये नमः।
94. ॐ सूर्याय नमः।
95. ॐ कवये नमः।
96. ॐ नारायणाय नमः।
97. ॐ परेशाय नमः।
98. ॐ तेजोरूपाय नमः।
99. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः।
100. ॐ सम्पत्कराय नमः।
101. ॐ ऐं इष्टार्थदाय नमः।
102. ॐ अं सुप्रसन्नाय नमः।
103. ॐ श्रीमते नमः।
104. ॐ श्रेयसे नमः।
105. ॐ सौख्यदायिने नमः।
106. ॐ दीप्तमूर्तये नमः।
107. ॐ निखिलागमवेद्याय नमः।
108. ॐ नित्यानन्दाय नमः।

पं. अजय शर्मा - 7234923855

जन्म पत्री विशेषज्ञ

॥ श्री सूर्य चालीसा ॥

- **दोहा** कनक बदन कुण्डल मकर, मुक्ता माला अङ्ग ।
  पद्मासन स्थित ध्याइए, शंख चक्र के सङ्ग ॥

- **चौपाई** जय सविता जय जयति दिवाकर! । सहस्रांशु! सप्ताश्व तिमिरहर ॥ ॥ १ ॥
  - भानु! पतंग! मरीची! भास्कर! । सविता हंस! सुनूर विभाकर ॥ ॥ २ ॥
  - विवस्वान! आदित्य! विकर्तन । मार्तण्ड हरिरूप विरोचन ॥ ॥ ३ ॥
  - अम्बरमणि! खग! रवि कहलाते । वेद हिरण्यगर्भ कह गाते ॥ ॥ ४ ॥
  - सहस्रांशु प्रद्योतन, कहिकहि । मुनिगन होत प्रसन्न मोदलहि ॥ ॥ ५ ॥
  - अरुण सदृश सारथी मनोहर । हांकत हय साता चढ़ि रथ पर ॥ ॥ ६ ॥
  - मंडल की महिमा अति न्यारी । तेज रूप केरी बलिहारी ॥ ॥ ७ ॥
  - उच्चै:श्रवा सदृश हय जोते । देखि पुरन्दर लज्जित होते ॥ ॥ ८ ॥
  - मित्र मरीचि भानु अरुण भास्क र। सविता सूर्य अर्क खग कलिकर ॥ ॥ ९ ॥
  - पूषा रवि आदित्य नाम लै । हिरण्यगर्भाय नमः कहिकै ॥ ॥१०॥
  - द्वादस नाम प्रेम सों गावैं । मस्तक बारह बार नवावैं ॥ ॥११॥
  - चार पदारथ जन सो पावै । दुःख दारिद्र अघ पुंज नसावै ॥ ॥१२॥
  - नमस्कार को चमत्कार यह । विधि हरिहर को कृपासार यह ॥ ॥१३॥
  - सेवै भानु तुमहिं मन लाई । अष्टसिद्धि नवनिधि तेहिं पाई ॥ ॥१४॥
  - बारह नाम उच्चारन करते । सहस जनम के पातक टरते ॥ ॥१५॥
  - उपाख्यान जो करते तवजन । रिपु सों जमलहते सोतेहि छन ॥ ॥१६॥
  - धन सुत जुत परिवार बढ़तु है । प्रबल मोह को फंद कटतु है ॥ ॥१७॥
  - अर्क शीश को रक्षा करते । रवि ललाट पर नित्य बिहरते ॥ ॥१८॥
  - सूर्य नेत्र पर नित्य विराजत । कर्ण देस पर दिनकर छाजत ॥ ॥१९॥
  - भानु नासिका वासकरहुनित । भास्कर करत सदा मुखको हित ॥ ॥२०॥
  - ओंठ रहैं पर्जन्य हमारे । रसना बीच तीक्ष्ण बस प्यारे ॥ ॥२१॥
  - कंठ सुवर्ण रेत की शोभा । तिग्म तेजसः कांधे लोभा॥ ॥२२॥
  - पूषां बाहू मित्र पीठहिं पर । त्वष्टा वरुण रहत सुउष्णकर ॥ ॥२३॥
  - युगल हाथ पर रक्षा कारन । भानुमान उरसर्म सुउदरचन ॥ ॥२४॥
  - बसत नाभि आदित्य मनोहर । कटिमंह, रहत मन मुदभर ॥ ॥२५॥
  - जंघा गोपति सविता बासा । गुप्त दिवाकर करत हुलासा ॥ ॥२६॥
  - विवस्वान पद की रखवारी । बाहर बसते नित तम हारी ॥ ॥२७॥
  - सहस्रांशु सर्वांग सम्हारै । रक्षा कवच विचित्र विचारे॥ ॥२८॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855
जन्म पत्री विशेषज्ञ

- अस जोजन अपने मन माहीं। भय जगबीच करहुं तेहि नाहीं॥ ॥२९॥
- दद्रु कुष्ठ तेहिं कबहु न व्यापै। जोजन याको मन मंह जापै॥ ॥३०॥
- अंधकार जग का जो हरता। नव प्रकाश से आनन्द भरता॥ ॥३१॥
- ग्रह गन ग्रसि न मिटावत जाही। कोटि बार मैं प्रनवौं ताही॥ ॥३२॥
- मंद सदृश सुत जग में जाके। धर्मराज सम अद्भुत बांके॥ ॥३३॥
- धन्य-धन्य तुम दिनमनि देवा। किया करत सुरमुनि नर सेवा॥ ॥३४॥
- भक्ति भावयुत पूर्ण नियम सों। दूर हटतसो भवके भ्रम सों॥ ॥३५॥
- परम धन्य सों नर तनधारी। हैं प्रसन्न जेहि पर तम हारी॥ ॥३६॥
- अरुण माघ महं सूर्य फाल्गुन। मधु वेदांग नाम रवि उदयन॥ ॥३७॥
- भानु उदय बैसाख गिनावै। ज्येष्ठ इन्द्र आषाढ़ रवि गावै॥ ॥३८॥
- यम भादों आश्विन हिमरेता। कातिक होत दिवाकर नेता॥ ॥३९॥
- अगहन भिन्न विष्णु हैं पूसहिं। पुरुष नाम रवि हैं मलमासहिं॥ ॥४०॥

- दोहा

भानु चालीसा प्रेम युत, गावहिं जे नर नित्य।
सुख सम्पत्ति लहि बिबिध, होंहिं सदा कृतकृत्य॥

॥ इति सूर्य चालीसा सम्पूर्णम ॥

पं. अजय शर्मा - 7234923855

जन्म पत्री विशेषज्ञ

॥ श्री सूर्यदेव की आरती ॥

- ॐ जय सूर्य भगवान, जय हो दिनकर भगवान ।
  जगत् के नेत्रस्वरूपा, तुम हो त्रिगुण स्वरूपा ।
  धरत सब ही तव ध्यान, ॐ जय सूर्य भगवान ॥ ॐ जय सूर्य भगवान .. ।

- सारथी अरुण हैं प्रभु तुम, श्वेत कमलधारी । तुम चार भुजाधारी ॥
  अश्व हैं सात तुम्हारे, कोटि किरण पसारे । तुम हो देव महान ॥ ॐ जय सूर्य भगवान .. ।

- ऊषाकाल में जब तुम, उदयाचल आते। सब तब दर्शन पाते ॥
  फैलाते उजियारा, जागता तब जग सारा। करे सब तब गुणगान ॥ ॐ जय सूर्य भगवान .. ।

- संध्या में भुवनेश्वर अस्ताचल जाते। गोधन तब घर आते ॥
  गोधूलि बेला में, हर घर हर आंगन में। हो तव महिमा गान ॥ ॐ जय सूर्य भगवान .. ।

- देव-दनुज नर-नारी, ऋषि-मुनिवर भजते। आदित्य हृदय जपते ॥
  स्तोत्र ये मंगलकारी, इसकी है रचना न्यारी । दे नव जीवनदान ॥ ॐ जय सूर्य भगवान .. ।

- तुम हो त्रिकाल रचयिता, तुम जग के आधार। महिमा तब अपरम्पार ॥
  प्राणों का सिंचन करके भक्तों को अपने देते। बल, बुद्धि और ज्ञान॥ ॐ जय सूर्य भगवान .. ।

- भूचर जलचर खेचर, सबके हों प्राण तुम्हीं। सब जीवों के प्राण तुम्हीं ॥
  वेद-पुराण बखाने, धर्म सभी तुम्हें माने। तुम ही सर्वशक्तिमान ॥ ॐ जय सूर्य भगवान .. ।

- पूजन करतीं दिशाएं, पूजे दश दिक्पाल। तुम भुवनों के प्रतिपाल ॥
  ऋतुएं तुम्हारी दासी, तुम शाश्वत अविनाशी। शुभकारी अंशुमान ॥ ॐ जय सूर्य भगवान .. ।

- ॐ जय सूर्य भगवान, जय हो दिनकर भगवान ।
  जगत् के नेत्रस्वरूपा, तुम हो त्रिगुण स्वरूपा।स्वरूपा ॥
  धरत सब ही तव ध्यान, ॐ जय सूर्य भगवान ॥ ॐ जय सूर्य भगवान .. ।

पं. अजय शर्मा - 7234923855

जन्म पत्री विशेषज्ञ